Class— T.D.C. Part III
Paper — V (धर्म-दर्शन)
(Philosophy of Religion)
Topic — अशुभ की समस्या
(Problem of Evil)

डॉ० पुनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

अशुभ की समस्या
(Problem of Evil)

ईश्वरवाद या ईश्वरवादी धर्मों के दायरे में 'अशुभ की समस्या' (Problem of evil) उत्पन्न होती है। ईश्वरवादी विचारधारा में माना जाता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, दयालु एवं शुभ है। ईश्वर के दयालु एवं सर्वशक्तिमान होते हुए भी विश्व में अशुभ का अस्तित्व होना विरोधाभास से युक्त है। विश्व में दो प्रकार के अशुभ हैं—

(1) प्राकृतिक (Natural) → प्रकृति द्वारा उत्पन्न दुःख या अशुभ प्राकृतिक कहा जाता है। जैसे — बाढ़, आँधी, भूकम्प, सूखा, ज्वालामुखी का फटना आदि। तथा

(2) नैतिक (Moral) → मनुष्य के संकल्प की स्वतन्त्रता (Freedom of Will) के दुरुपयोग से उत्पन्न अशुभ इसके दायरे में आते हैं। जैसे — हत्या, चोरी, वध, निन्दा आदि।

इन दोनों प्रकार के अशुभ के कारणों को दूर कर पाना ईश्वरवादी विचारधारा के लिए अत्यन्त कठिन है।

प्राचीन काल में ग्रीक दार्शनिक एपिक्यूरस ने इस समस्या के सन्दर्भ में कहा है कि ईश्वर यदि अशुभ को मिटाना चाहता है, किन्तु मिटा नहीं पाता, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है। यदि ईश्वर मिटा सकता है, किन्तु मिटाना नहीं चाहता, तो वह दयालु नहीं है। उन्होंने अशुभ के अस्तित्व पर प्रश्न करते हुए कहा है कि यदि ईश्वर इसे मिटा सकता है तथा मिटाना चाहता है, तो ऐसी स्थिति में अशुभ की सत्ता ही क्यों है? इसीप्रकार के प्रश्न आधुनिक युग में डेविड ह्यूम ने किये हैं। उनका कहना है कि विश्व में अशुभ यदि ईश्वर की इच्छा से है, तो वह दयालु नहीं है और यदि उनकी इच्छा के विपरीत है, तो ईश्वर को सर्वशक्तिमान नहीं कहा जा सकता। अतः यह देखा जा सकता है कि ईश्वरवादी विचारधारा में ईश्वर के अस्तित्व एवं उसके गुणों के साथ अशुभ की सत्ता का सामंजस्य होना आवश्यक है।

ईश्वरवादी धर्मों में भी यह समस्या विशेष बलवती है। यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम जैसे एकेश्वरवादी धर्मों में ईश्वर का केन्द्रीय महत्व है। यहाँ अशुभ की समस्या उत्पन्न होती है। हिन्दू धर्म में यह समस्या उतनी विकट नहीं है क्योंकि इसमें अनेक तरह की विचारधाराएँ हैं तथा यह केवल एकेश्वरवादी धर्म नहीं है। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म में यह स्थिति थोड़ी भिन्न है। इन दोनों धर्मों में अशुभ के अस्तित्व को तो माना जाता है, किन्तु ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं की जाती। इसलिए अशुभ की समस्या केवल ईश्वरवादी धर्मों में ही है।

अशुभ की इस समस्या के निदान के लिए ईश्वरवादियों ने अनेक समाधान प्रस्तुत किये हैं।

ये हैं—

① अशुभ मानव के संकल्प-स्वातन्त्र्य के दुरुपयोग का परिणाम है।

इस मत में कहा गया है कि ईश्वर ने मनुष्य को संकल्प-स्वातन्त्र्य दिया है जिसके कारण वह कई वैकल्पिक कर्मों में किसी एक का चयन कर सकता है। इसलिए अशुभ के अस्तित्व के लिए ईश्वर नहीं, मनुष्य स्वयं जिम्मेवार है। ईसाई धर्म में अशुभ का आधार मानव द्वारा चुने गये गलत कर्म को माना गया है। जॉन मिल ने भी इसी मत का समर्थन करते हुए कहा है कि अशुभ की उत्पत्ति मनुष्य की दुष्टता से होती है।

अशुभ की इस व्याख्या के विरुद्ध अनेक तर्क दिये गये हैं। जॉन हॉस्पर्स ने कहा है कि इससे केवल नैतिक अशुभ की व्याख्या होती है, प्राकृतिक अशुभ के लिए मानव को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। अन्य विचारकों में कान्ट, बोसांकेत आदि ने भी इस मत का खण्डन किया है। इन विचारकों के अनुसार संकल्प की स्वतन्त्रता यदि ईश्वर ने मानव को दी है, तो उसके साथ दो विकल्प अवश्य दिये होंगे। इससे सिद्ध होता है कि अशुभ की सृष्टि भी ईश्वर ने संकल्प की स्वतन्त्रता के साथ ही की होगी।

② अशुभ का अस्तित्व ही नहीं, अशुभ मिथ्या है।

कुछ विचारकों ने अशुभ के अस्तित्व को ही अस्वीकार किया है, इसे भ्रम या मिथ्या कहा है। आचार्य शंकर, स्पिनोजा आदि दार्शनिकों के मत में 'शुद्ध तत्त्व' शुभ-अशुभ से परे है। शंकर ने 'ब्रह्म' को तथा स्पिनोजा ने 'द्रव्य' को शुभता एवं अशुभता के विचार से परे माना है।

(क्रमशः)